Krishna tatva nirnaya

सामरहस्य उपनिषद श्री राधाकृष्ण को “**क्षराक्षराभ्याम अधिकः**” अर्थात क्षर (प्रकृति) और अक्षर ब्रह्म (पुरुष) से भी परे बतलाता है यानि अक्षरातीत २६ वा तत्व।

The Samarahasya Upanishad describes Sri Radhakrishna as “**ksharaksharabhyam adhikah**” meaning beyond the letter (nature) and the letter Brahman (man) i.e. the 26th element

नित्यानामात्मनां नित्य आत्मा चेतनचेतनः ।

क्षराक्षरेभ्यश्च परस्त्वं ब्रह्म परमं हरे ॥२९ ॥

Skandapurana 2.9.17.29

हे कृष्ण ! आप सनातन आत्माओं के भी सनातन (तत्व) हैं; आप प्राणियों की चेतना हैं; नाशवान और अविनाशी से परे आप ही परब्रह्म हैं।

Shri Krishna! You are the eternal (element) of eternal souls; the soul, the sentience of sentient beings; beyond the perishables and imperishables . You are the Supreme Brahman, O Hari.

गोलोकवासी भगवान अक्षरात् पर उच्यते।

Vayupurana

गोलोकवासी भगवान कृष्ण अक्षरातीत ब्रह्म हैं।

Lord of Goloka bhagwan Shri krishna is aksharatita tattvam

यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः।

अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः॥ 18॥

Yasmāt kṣharam atīto 'ham akṣharād api chottamaḥ

Ato 'smi loke vede cha prathitaḥ puruṣhottamaḥ

Bhagwad gita 15.18

श्री कृष्ण कहते हैं:- मैं नाशवान प्रकृति जगत् तथा अविनाशी आत्मा से भी परे अर्थात अक्षरातीत हूँ; इसलिए वेदों तथा स्मृतियों में मुझे पुरुषोत्तम कहा गया है।

Shri Krishna says :- I am transcendental to the perishable world of matter, and even to the imperishable soul; hence I am celebrated, both in the Vedas and the Smṛitis, as the Supreme Divine Personality.

वासुदेव स्यात् स्वयं ब्रह्म निरक्षरः।

Narad pancharatra antargat vashist Samhita

वशिष्ठ जी कहते हैं:- श्रीकृष्ण स्वयं अक्षरातीत/ निरक्षर ब्रह्म हैं।

Vasisht says:- Shri Krishna is himself aksharatita/ nirakshar brahman

तस्मात् क्षर विश्वं इदम् अक्षरं ब्रह्म केवलम्।

श्रीकृष्णश्च अक्षरातीतः पुरुषोत्तम संज्ञितम्। ।

Purana samhita

जगत अनित्य है और अक्षर को ब्रह्म कहते हैं। श्रीकृष्ण स्वयं अक्षरातीत ब्रह्म हैं।

Jagat is destructible and indestructible is akshara brahman . Krishna is beyond perishable and imperishable or aksharatita brahman

श्रीकृष्ण एव अक्षरातीत सच्चिदानन्दलक्षणः ।

Brihad sadashiva samhita

श्रीकृष्ण स्वयं अक्षरातीत ब्रह्म और सच्चिदानन्द स्वरूप हैं।

Shri Krishna is himself aksharatita brahman and full of complete bliss